ISSN 2278-554 X Lamahi

लमही

जनवरी–जून, 2016 (संयुक्तांक)

₹15/-

लमही

वर्ष: 8 • अंक: 3-4 • जनवरी-जून 2016 (संयुक्तांक)

इस अंक में

पुनरावलोकन

शताब्दी वर्ष में–उसने कहा था –डॉ. विजय बहादुर सिंह 7

कथा–प्रान्तर

दुनिया ठेके पर नहीं बदली जाती –सूरज पालीवाल 10
(स्वतं प्रकाश का कथा संस्कार)

साक्षात्कार

सत्ता अधिक अदृश्य, शातिर, संगठित और बर्बर हो गई है 16
(सुप्रसिद्ध कथाकार अखिलेश से युवा समालोचक डॉ. श्रुति की बातचीत)

प्रत्यंचा

सांस्कृतिक राजनीति और साहित्यिक संस्कृति –डॉ. अजय तिवारी 23

मानसरोवर

संघर्ष अपने अपने –अशोक मिश्र 28
काल कलौटी –नसीम साकेती 32
दूसरी शहादत –गौतम राजरिशी 35
जल देवी –रश्मि भारद्वाज 38
आग लगी जाने को ओ... –नीलम कुलश्रेष्ठ 42
आज की पारबती –रीना मेनारिया 48

कविता कीर्ति

विष्णु नागर 51/ लीलाधर मंडलोई 52/ सुधीर सक्सेना 54/ संतोष श्रीवास्तव 56/ अंजना वर्मा 58/ तुषार धवल 60/मनोज कुमार पाण्डेय 64/ वीरू सोनकर 66 / सौरभ श्रीवास्तव 68/ असीमा भट्ट 69

कुलेल

बुरा जो देखन मैं चला उर्फ़ थानेदार उवाच –डॉ. सुशील सिद्धार्थ 72

रंगभूमि

आचार्य –इंदिरा दांगी 74

अध्ययन कक्ष

असहिष्णुता में सहिष्णुता का टीका लगाती व्यंग्य रचनाएं –विवेक मिश्र 97
(सुशील सिद्धार्थ की किताब पर)

अलग से चीन्ही जाने वाली कविताएं –यशस्विनी पाण्डेय 99
(सुधीर सक्सेना की किताब पर)

विकास का राजनीतिक समाजशास्त्र और हाशिए का समाज –डॉ. शशि भूषण मिश्र 102
(सत्यनारायण पटेल की किताब पर)

उपनिवेशवादी समस्याओं से जूझता कथाकार –धर्मेन्द्र प्रताप सिंह 104
(प्रदीप सौरभ की किताब पर)

इतिहास और धर्म के परिप्रेक्ष्य में मीराबाई –सरिता शर्मा 106
(सुधाकर अदीब की किताब पर)

निम्न मध्यमवर्गीय समाज का आइना –शशि श्रीवास्तव 107
(प्रताप दीक्षित की किताब पर)

रहे हैं कि काश! यह धन कलश उनकी मुट्ठी में आ जाए! जो लोग मर गए हैं उनके नाम पर भी वृद्धावस्था और विधवा पेंशन आ रही है। अचानक से गाँव में हांथी सूंड खूब नजर आने लगी है। मर चुके लोगों के नाम पर भी मस्टर रोल बन रहा है। उपन्यास पंचायतों में मची लूट की सोनोग्राफी है।

झब्बू गाँव में बहुत कुछ करने का इरादा लिए सरपंच बनी थी और सरपंच बनने के बाद गाँव के लिए कुछ न कुछ करती रहती थी, किन्तु बहुत कम समय में वह अपने लक्ष्य से विचलित हो गयी। उपन्यास झब्बू का पक्ष रखते हुए यहाँ पाठक को कन्विन्स करने की कोशिश करता है कि उसके जैसे सीधे सादे और बलहीन लोगों को सत्ता में काबिज धूर्त और ताकतवर लोग किस तरह अपने मकड़जाल में फंसाते हैं। भला कैसे कोई सरपंच समझौता करने से मना कर दे जब पूरी योजना ही गायक मंत्री जैसे लोग तय कर रहे हों। गायक मंत्री की मौजूदगी में यह तय हुआ कि रेती और गिट्टी की खदानों का ठेका नए सिरे से नीलाम होगा। ठेका संतोष पटेल लेगा। मुनाफे में झब्बू भी पच्चीस प्रतिशत की भागीदार होगी। कई सुनियोजित हत्याओं के बाद झब्बू को भी मार दिया जाता है। इस प्रसंग का अंत जिस तरह से होता है वह विषयवस्तु का सही ट्रीटमेंट नहीं है। लेखक यहाँ 'ठस यथार्थ' का अतिक्रमण नहीं कर पाता जिससे आगे होने या हो सकने वाले सम्भावनाशील यथार्थ का संकेत यहाँ मिल पाता। झब्बू की मृत्यु से उपन्यास क्या सन्देश देना चाहता है? बात केवल झब्बू की मृत्यु की ही नहीं है वरन सरपंच बनने के बाद उसके अन्दर गाँव के लिए बहुत कुछ करने की जो लालसा थी, जो स्वप्न थे उनका विस्तार किया जा सकता था बजाए जाम सिंह और माखन शुक्ला की लम्बी चर्चाओं के। जग्गा द्वारा अर्जुन सिंह की हत्या के साथ जिस तरह उपन्यास अपनी इति ग्रहण करता है वह प्रतिरोध का संकेत अवश्य है पर हत्या किसी सकारात्मक और अग्रगामी विजन का विकल्प कभी नहीं बन सकती।

यह कहने में कोई संकोच नहीं होना चाहिए कि नयी सदी के इन डेढ़ दशकों में नई पीढ़ी के युवा कथाकारों के जो उपन्यास आए हैं उनमें इतनी परिपक्व और संश्लिष्ट राजनीतिक चेतना की उपस्थिति विरल है। उपन्यास के शिल्प पर बहुत विस्तार से चर्चा की गुंजाइश है क्योंकि कथा का टटकापन उसकी वस्तु से ज्यादा उसके शिल्प में अन्तर्निहित होता है। 'गाँव भीतर गाँव' साझीदार जीवन संस्कृति के महीन धागों के छिन्न-भिन्न होने के परिणामस्वरूप गाँव के भीतर जन्म ले चुके अनंत गाँवों के बनने-विकसित होने के कारणों की पहचान गहरे कंसर्न के साथ करता है। यह एक जरूरी रचना है जिससे गुजरते हुए हमारे अनुभव में बहुत कुछ जुड़ता चला जाता है।■

पता : सहायक प्रोफेसर-हिंदी
राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बांदा
मो. : 09457815024

किताब : गाँव भीतर गाँव, लेखक-सत्यनारायण पटेल,
प्रकाशक : आधार प्रकाशन, पंचकूला, हरियाणा मूल्य : 200/-रुपए

नव उपनिवेशवादी समस्याओं से जूझता कथाकार

■ **धर्मेन्द्र प्रताप सिंह**

'और सिर्फ तितली' प्रदीप सौरभ का हाल ही में वाणी प्रकाशन से प्रकाशित नवीनतम उपन्यास है। इससे पहले वे 'देश भीतर देश', 'मुन्नी मोबाइल' और 'तीसरी ताली' उपन्यासों के माध्यम से पाठकों के बीच अपनी सार्थक उपस्थिति दर्ज करा चुके हैं। 'मुन्नी मोबाइल' में एक ऐसी स्त्री की कहानी है जो अत्यधिक महत्वाकांक्षी होने के कारण सफलता अर्जित करती है और अन्ततः सभी सफलताओं को प्राप्त करते हुए भी दुःखद अन्त की ओर अग्रसर होती है। उपन्यास में दिखाया गया है कि बाजार एक स्त्री को अति महत्वाकांक्षी बनाकर उसे गलत रास्तों पर ले जाकर अन्ततः निगल जाता है। 'तीसरी ताली' हिजड़ों के जीवन को केन्द्र में रखकर लिखा गया एक अलग पृष्ठभूमि का उपन्यास है। 'देश भीतर देश' भारत की आंतरिक संरचना को उद्घाटित करने वाला उपन्यास है। यह पूर्वोत्तर नागरिकों से साथ हो रहे भेदभाव को आधार बनाकर लिखा गया है।

'और सिर्फ तितली' में प्रदीप सौरभ ने आज के नव उपनिवेशवादी युग की ज्वलन्त समस्याओं यथा-आधुनिक शिक्षा नीति की खामियाँ, पुरानी और जर्जर हो चुकी शिक्षा पद्धति, नौकरी की तलाश में दर-दर भटकते पढ़े-लिखे बेरोजगार युवा, निजी शिक्षण संस्थाओं द्वारा किए जा रहे उनके शोषण, सूचना और संचार क्रांति के युग में बुजुर्गों का एकाकीपन, निरन्तर पतित हो रहे नैतिक और आध्यात्मिक मूल्य, डोनेशन के बोझ से टूटती अभिभावकों की कमर, देश में निरन्तर फैल रहे भ्रष्टाचार, युवाओं का देश छोड़कर विदेश की ओर हो रहे पलायन, दहेज आदि को प्रमुखता से उठाया है और साथ ही इसके मूल कारणों की ओर पाठकों का ध्यान ले जाने का सकुशल प्रयास भी किया है। यह सही है कि प्रदीप सौरभ पूरे उपन्यास में इन समस्याओं से निपटने का कोई कारगर उपाय नहीं ढूढ़ पाये लेकिन इनके मूल में जाने का पूरा प्रयास किया है। समस्याओं के बोझ से आज का युवा ऐसे दब गया है कि वह कोई भी स्थायी निर्णय ले पाने में स्वयं को असमर्थ पाता है। आपसी समझ के अभाव में तलाक आज के समय की बड़ी समस्या